

माक्स का खूंट



लेखक "श्री चन्द्र"

प्रकाशक:—

राष्ट्रीय प्रचार संघ

लखनऊ

मूल्य दो आना

मार्क्स का खूंट



लाल को हिन्दू धर्म की महानता और वैज्ञानिकता के विषय में कभी भी न तो उसके माता पिता ने बताया और न किसी अड़ोसी पड़ोसी ने ही, बेचारे को उपनयन की आवश्यकता मालूम ही कैसे होती। उसने यही समझ रखा था कि शौच आदि के समय कान पर लपेटना-चाज़ार की कभी कोई वस्तु न खाना, और अपने को द्विजों में गिनने के लिए इसकी चपरास कन्धे में डाले रहना आवश्यक है, और जीवन की सरसता, और स्वच्छन्दता को हरने के लिए यह मनू की लगाम है। अंत में इस लगाम से परेशान होकर लाल ने उसे तोड़ने का ही निश्चय कर लिया। दो तीन बार उसने प्रयत्न किया, परन्तु कुसंस्कार सामने आकर बाधक बन जाते थे। अंत में एक दिन वह इस लगाम से मुक्त हो ही गया।

गान्धी जी के अछूतोद्धार आन्दोलन में जब अग्रणी और सवर्णों में यज्ञोपवीत को लेकर लाठियां तनने लगी, उस समय लाल ने बीच में पड़ कर अग्रणी को यज्ञोपवीत की निस्सारता समझा कर उस भगड़े में सवर्णों का मान रखा था। और ठीक भी था, था तो ब्राह्मण ही, नाम का ही सही। उपनयन से द्विज बनना उसके अपने ही मन की उपज थी। और द्विज की व्याख्या भी उसकी मौलिकता को प्रगट

कारण थी। वह कहता था कि जिनके माने दो जन्म के होते हैं, मनुष्य में दो जन्म कैसे? क्या मनुष्य भी कोई मुर्गी है जो एक अंडा देते समय और दूसरा टूटने पर उसका जन्म होता हो?

डार्विन का “विज्ञानवाद” और फ्रायड का “कामवाद” भी उसने पढ़ लिया था। और इन पर उसे पूर्ण विश्वास हो गया था। उसका विश्वास था कि लिंग भेद में प्रेम नाम की कोई वस्तु नहीं, केवल कामावुरता ही है, जो एक दूसरे को बांधे रहती है। माँ, पुत्र, भाई, बहिन—आदि में पवित्र वात्सल्य या प्रेम का कोई स्थान नहीं है।

लाल अब वी० ए० का विद्यार्थी था—उसकी बुद्धि विकसित हो चुकी थी, उसका ज्ञान केवल पुस्तकों तक ही सीमित न था—उसके पास बुद्धि थी और सोचने के लिये समय भी। और समस्याओं की तो कमी न थी।

पिछले निर्वाचन के समय कांग्रेस के नेताओं ने बड़े २ वादे किये थे। “देश से निर्धनता मिटा देंगे”—“अशिक्षा को इस देश के तीनों ओर फैले महासागर में डुबा कर ही दम लेंगे”—“पूँजीवाद को तो दुनिया के किसी भी स्थल में वह स्थान देने को तैयार थे ही नहीं। परन्तु राज्य की बागडोर हाथ में आते ही वह अपने किये हुए वादों को अपनी आदत के अनुसार भूल गये। इन सब वादों को भी उन्होंने वैसे ही भुला दिया था, जैसे देश का विभाजन करते समय, पूर्व काल में की गई “अखंड—भारत” की प्रतिज्ञाओं को। देश में आज भी निर्धनता का बोल वाला था—अपने बच्चों को शिक्षित बनाना धनाभाव के कारण असम्भव हो रहा था। मकान और दुकान के लिये हजारों की पगड़ियां चल रही थी—घूमखोरो और चोर बाज़ारों का बाज़ार गर्म था। क्या यह सब गम्भीर समस्याएँ सोचने के लिये कम थीं? लाल भी इन समस्याओं में उलझता गया। कितने ही राष्ट्रीय नेताओं के विचारों को उसने पढ़ा, परन्तु उसके स्वच्छन्द मन को सन्तोष नहीं

हुआ, उसे मैं अपने एक सहयोगी के द्वारा उसे मार्क्स का “डॉस कैपिटल और कम्युनिस्ट्स मैनिफैस्टो” को पढ़ने का अवसर मिला। इसमें उसने अपने मन की स्वच्छन्दता के अनुसार ही मसाला पाया। उसने सोचा परोपकार-निर्धनोद्धार और फिर पूर्ण स्वच्छन्दता-न धर्म कर्म का भंग और न बड़ों की डाट फटकार, पूर्ण स्वच्छन्द जीवन-जहां चाहो बिचरो, जिस खेत में चाहो मुँह डालो, यदि कोई रोके,—तो उल्टे चोर कोतवाल को डाटे-वाली कहावत-और क्या चाहिये !

बस, बड़े २ बाल बिना तेल पड़े और बिना कढ़े और उलभे हुए-खद्वर का मैला सा मोहरी के पास में कुछ कुछ फटा हुआ पैजामा-ऊर्चे कालर का कुर्ता और टूटी सी चप्पल पहने—हाथ में अंग्रेजी का खबार लिये वह मार्क्स के खूंटें में जा बंधा।

लाल पहले कभी २ अपने फूफा के यहां जाया करता था, परन्तु अब तो लगभग वह नित्य ही वहां जाने लगा। कालेज से लौटने अथवा पार्टी की बैठक के उपरान्त वह अक्सर वहां जाता था। सगा सम्बन्धी होने के कारण उसे वहां उठने बैठने, और आने, जाने में कोई रोक न थी, और इस स्वतंत्रता का वह भलिभांति उपयोग कर रहा था। फूफा के एक लड़की मालती थी जो गवर्नमेंट गर्ल्स कालेज की दसवीं कक्षा में पढ़ती थी। लाल बड़े चाव और उत्साह के साथ उसे अंग्रेजी और गणित आदि पढ़ाया करता था। धीरे २ मालती को भी अपने रंग में रंगना आरम्भ किया। मालती और लाल बैठे बातें कर रहे थे—मालती पूछ रही थी लाल ! क्या यदि कोई रईस न रहे, तो निर्धनता समाप्त हो सकती है ? अवश्य ! यदि धन कुछ व्यक्तियों की तिजोरियों का शृंगार बन कर न रहे, तो समाज में कोई निर्धन नहीं रह सकता—समाज की निर्धनता का कारण धन का कुछ मनुष्यों के पास जमा हो जाना ही है। मालती ने पुनः पूछा, परन्तु यह मिट कैसे सकती है—लाल भाई ? लाल बोला—अरे ! इन रईसों को एक लाईन में खड़ा

मालती सहम गई—क्या कहा ? ऐसा करने से पाप नहीं होगा ? पाप कैसा ! संसार में पाप, पुण्य कुछ नहीं है—यह सब गरीबों को डराने के लिये स्वार्थियों का ढोंग है ! अच्छा मालती अब मैं चल रहा हूँ । आज बहुत थक गया हूँ—दो तीन गावों में घूम कर आया हूँ । बेचारे देहाती भाइयों का जीवन नरक बन रहा है, उनकी गरीबी देखकर रुलाई आती है ।

लाल जब चला, तो रात्री के दस बज चुके थे, थका मांदा परेशान था । कुछ देर के लिये सामने वाले रेस्टोरा में जाकर कुर्सी पर बैठ गया । ब्वाय ! एक पैक इम्पीरीयल विहस्की, और एक पैकिट कैप्सटन का लात्रो—एक बोतल सोडा और एक कटलेस भी ले आना ।



लाल कहते हैं कि मालती और लाल में कुछ गड़बड़ है, नहीं तो इतनी घनिष्टता क्यों ? अब तो मालती भी कामरेड हो चुकी है—हो सकता है ठीक हो—परन्तु फिर सोचना पड़ता है कि भाई—बहिन—फिर देश भक्ति की सच्ची लगन—इन सबके होते हुए क्या यह सम्भव है ? क्या कहा जाय ! ठीक भी हो सकता है, बेलगाम के ही जो ठहरे !!

रात्रि को ग्यारह बजे जब बिजार खाता की सभा से सब कामरेड लौटे, तो मालती भी साथ थी—लाल के कहने को न टाल सकने के कारण बेचारी चली तो गई, परन्तु उसकी जान सूख रही थी पिता जी क्या कहेंगे—कितना गुस्सा होंगे—आज पहले ही बार तो रात्रि के समय तक वह घर से बाहर थी—अन्यथा वह संध्या से पहले ही घर पहुँच जाया

करती थी—अब बेचारी क्या करे, इस उधेड़ धुन में थी। आखिर लाल से कहा—कामरेड लाल ! मुझे नखलाकर, कमरे में जाकर चढ़ जा जाना ! लाल चौंक पड़ा—जैसे बिच्छू डंक मार गया हो—यह कैसे हो सकता है ? फूफा जी क्या कहेंगे—वह मुझ पर क्रोधित होंगे। मालती बोली—यदि यही करना था, और इतनी ही कायरता दिखानी थी, तो मुझे क्यों बर्सीटा था। कामरेड लाल निरुत्तर हो गये—दोनों १२ बजे मालती के घर की ओर चले। घर के समीप पहुँचते ही लाल ने कहा—मालती ! इस समय ऐसे जाना ठीक नहीं, तुम दीवार पर चढ़ कर चुपके से अपने कमरे की ओर उतर जाना और जाकर लेट जाना। परन्तु मैं दीवार पर कैसे चढ़ूँगी ? मैं चढ़ा दूँगा—दोनों दीवार के समीप आ गये तो सोचने लगे कि क्या किया जाय, परन्तु इसके लिये अधिक माथा पच्ची करने की आवश्यकता नहीं पड़ी—जो समाज की बनाई दृढ़ दीवार को लांघ सकता है, उसे इस छोटी सी दीवार लांघने से कौन रोक सकता था।

मालती लाल के कंधों पर चढ़ गई—लाल दीवार पकड़ कर खड़ा हो गया और मालती दीवार पर चढ़ कर अपने कमरे की ओर उतर गई ।

सुबह मालती बहुत जल्दी उठी—सच तो यह है कि शंका और भय के कारण रात भर मालती को नींद ही नहीं आई थी। प्रातःकाल फांसी पाने वाले बन्दी की जो अवस्था होती है, मालती की अवस्था उससे कुछ कम न थी—आखिरकार सवेरा हुआ और अपराधिनी की भांति मालती को न्यायालय में जाना ही पड़ा।

पिता कह रहे थे—मालती ! रात कहाँ थी ? मैं कमरे में थी पिताजी !
भूठ बोलना भी सीख लिया—सच सच बता, नहीं तो कठोर दंड दूँगा !
मुझे यह सब नापसन्द है ।

मैं तो कहीं नहीं गई थी—मालती ने बहुत धीरे से कहा।

रात के बारह बजे तक मैंने तेरा कमरा देखा तू वहां नहीं थी। मुझे सब मालूम है—लाल ने तुझे भी “मरभुक्खों” का साथी बना लिया है, कल से कहीं गई तो खाल खींच दूँगा।

मालती पुस्तकें लेकर स्कूल गई, परन्तु वहां उसकी तबीयत नहीं लगी, छुट्टी लेकर सीधे लाल के कालेज़ पहुँची—लाल ने देखा और मुस्करा दिया। मैं तुमसे एक बात कहने आई हूँ। क्यों क्या हुआ ?—पिता जी ने मना कर दिया है। मालती ! अभी तक तुम्हारे हृदय की पराधीनता नहीं गई।

अखिर मैं क्या करूँ भुभंलाकर मालती ने कहा। करो क्या ! घर छोड़ दो, और क्या करो !! घर छोड़ कर रहूँगी कहां ! रहने का प्रबन्ध हो जायेगा। एक कमरा तुम्हें दे दिया जायेगा तुम्हारे खाने और पढ़ने का सब खर्चा पाटी करेगी।

पाटी के पास इतना रुपया कहां से आया ? मालती ने प्रश्न किया। पाटी के पास धन की कमा नहीं है, धन आने के पचासों रास्ते हैं—मालती चुप हो गई उसे जैसे विश्वास नहीं आता था।

लाल हंस कर बोला—मालती ! यह स्वतंत्रता और आनन्द—जीवन में कहीं अन्यत्र नहीं मिलेगा। बोलो तैयार हो। मालती के सामने अब घर छाड़ने के अतिरिक्त और कोई मार्ग भी तो न था। चार दिन बाद ही अपने अनाचार का भांडा फूटने का भी तो भय था।



कामरेड लाल का अब अधिकांश समय पाटी के कार्यालय में ही बीतता था। कालेज़ जाने का समय आ रहा था और लाल कुछ कागज़ों को उलट रहा था—इतने में द्वार खुला और एक युवती ने प्रवेश किया—लाल ने सर उठा कर देखा और देखता ही रहा—यह

मदारी लाली खलें, लाल नरुनकोल, यह मुझ, उता हु और धीमे लाल एक टक देखता रहा। युवती सकुचायी सी खड़ी अपने अंग प्रत्यंगों को फटे चाथड़ों में लपेटने का निष्फल प्रयत्न कर रही थी, परन्तु यौन को उन कपड़ों से भाकने का अवसर मिल ही जाता था। और लाल की तेज नज़रों से बचना तो और भी कठिन हो रहा था। लाल ने बड़ी नम्रता से पूछा—कहो ! तुम यहां कैसे आई ! वावू ! मैं सेठ मनी लाल की मिल में काम करती हूँ। इस महीने में आठ दिन मैं काम पर नहीं जा सकी, अब मेरी तनख्वाह कट रही है आप हो सोचिये ! तनख्वाह यदि कट गई तो हम गरीब क्या खायेंगे।

तुम्हारा नाम क्या है ? कामरेड लाल ने पूछा वड़े सकुचाते हुए युवती बोली, वावू ! मेरा नाम धन्नो है। अच्छा ! इस समय तो मैं कालेज़ जा रहा हूँ—आज शाम को ८ बजे आ जाना—तुम्हारा काम—हो जायगा। धन्नो चली गई। लाल सोचने लगा यह रूप—और यह वेश !

शाम को सात बजे से ही आकर लाल (कम्यून) दफ्तर में बैठ गया और बड़ी उत्सुकता से धन्नो की प्रतिज्ञा कर ने लगा।

लाल इन बातों का अम्यासी हो चुका था। कुछ अधिक सोच विचार और लज्जा भय आदि को वह अपने मन में स्थान नहीं देता था। क्यों कि वह सोचता था कि यदि ज़रा ज़रा सी बातों में भय हुआ तो बड़े २ काम जो करने हैं, वह कैसे पूरे होंगे। सारे संसार के मज़दूरों का संगठन करना और उन्हें लाल भण्डे के नीचे लाकर—रुस को संसार का अधिनायक बनाना क्या कोई आसान काम है। द्वार के खुलते ही लाल की दृष्टि तुरन्त उधर गई और उसने देखा धन्नो खड़ी है।

आओ धन्नो अन्दर आ जाओ, परन्तु धन्नो आगे न बढ़ी। हाँ, कहो ! आठ दिन तुम काम पर क्यों नहीं गई थी ?

धन्नो सोचने लगी क्या उत्तर दूँ, क्या कह दूँ कि बाहर घूमने

चली गई थी ? उसे भय था कि शायद इसके कहने से बाबू साथ न दें और पैसा न मिले ।

धन्नों को विचार मग्न देख कर—लाल ने कहा—कुछ भी हो, हमें तो तुम्हारी और से लड़ना ही है । कल से ही हमारी लड़ाई शुरू हो जायगी । अन्दर आ जाओ, तो कुछ बातें तुमसे पूछ कर लड़ाई की तैयारी करूँ ।

धन्नों ने वहीं से खड़े २ कहा—बाबू आप पूछिये, मैं यहीं से बता दूँगी । क्यों क्या मुझसे भय लगता है ? नहीं बाबू कोई देख लेगा तो क्या कहेगा । अच्छा तुम कोन विरादरी हो ? बाबू हम पासी हैं । तुम्हारा आदमी क्यों नहीं आया ? वह ताड़ी पीकर लेट गये हैं । कोई हर्ज नहीं, दिन भर की थकान उतारने के लिये कुछ तो चाहिये ही, इतना कहता हुआ लाल उठा—और धन्नों के समीप आकर उसका हाथ पकड़ कर अन्दर घसीट लिया और द्वार बन्द कर लिये ।

धन्नों कहती रही बाबू यह सब नहीं ।

जोर से बोलोगी तो कोई सुन लेगा और सबेरे ही विरादरी की पंचायत तुम्हें विरादरी से निकाल देगी ।

धन्नों की आवाज़ बन्द हो गई और फिर.....
धन्नों जिस समय कमरे के बाहर निकली तो मालती द्वार पर खड़ी थी । धन्नों अपने अस्त व्यस्त बाल और कपड़े समझालती हुई रात्रो के अंधेरे में आगे बढ़ गई । मालती क्रोधित नागिन सी कमरे में घुसी ।

क्यों लाल ! यह तुमने क्या किया ? कुछ भी तो नहीं—कोई विशेष बात—आज इतना नाराज़ क्यों हो ? विशेष बात कुछ नहीं—तुम्हारे लिये तो साधारण ही है—मैं तुमसे पूछती हूँ कि अगर तुम्हें यही सब करना था तो तुमने मेरा सर्वनाश क्यों किया ? आ ! हो !! अब मैं समझा—शायद धन्नों को देख कर ही आपसे बाहर हो गई हो, तो सुनो ! तुम्हें किसी के व्यक्तिगत मामलों में बोलने का कोई हक नहीं है ।

तो क्या तुम्हें मुझसे विवाह नहीं करना है ?

विवाह कैसा ? विवाह के बंधन में हम लोग नहीं बंधते—अपनी कामेच्छा को पूरा करने के लिये तुम्हें मेरी आवश्यकता थी और मुझे तुम्हारी—इसी लिये हम लोग मिले थे। इससे अधिक कुछ नहीं। तो क्या इस इच्छा की तृप्ति हो गई ?

नहीं ! किन्तु तुम्हारे ही साथ मैं बंधा नहीं हूँ—जहां मेरी इच्छा होगी वहां मैं जाऊंगा, जहां तुम्हारी इच्छा हो तुम जाओ, बहुतेरे कामरेड हैं।

तुम्हारे इस कलंक के साथ कहां जाऊँ ?

इसका प्रबन्ध हो जायेगा इसके लिये तुम परेशान न हो।

मालती दोनों हाथों से मुँह ढक कर रोने लगी, सम्भवतः रात भर उसकी यही दशा रही। किन्तु बेचारे लाल को यह सब देखने, सुनने का अवकाश कहां—उसे तो संसार की दरिद्रता मिटानी थी—पूजापतियों का नाश करना था। वह सबेरे उठा और चल दिया।

मालती सोचती रही इस मार्क्स के खूटें से—जिसकी डोरी असीम है—मनु की लगाम ही अच्छी है—जहाँ नारी को अर्धाङ्गिनी बनने का तो गौरव प्राप्त है।



क्या मेरी इस योजना से आप असहमत हैं ?

आप ही तनिक विचार कीजिये कामरेड लाल ! कि व्यर्थ मैं कितने मनुष्यों की जाने जायेंगी।

अपने ध्येय की सफलता के लिये हमें इन बातों का विचार नहीं करना चाहिये। —परन्तु इससे लाभ क्या होगा ?

राज्य के प्रबन्ध में गड़बड़ी उत्पन्न होगी, और इससे फिर जनता में राज्य के प्रति असंतोष बढ़ेगा।

परन्तु हमसे तो हमारी धर्मों के प्रति अनन्त प्रेम और उत्पन्न हो जायेगी।

जनता इतनी बुद्धिमान नहीं होती, वह भीरू होती है,—हमारे आतंक से भयभीत होकर वह हमारा ही साथ देगी—कामरेड लाल ने पुनः समझाया।

यदि आपका ऐसा ही विचार है तो फिर ऐसा ही कीजिये। ठीक है ! आज रात को १२ बज कर ५० मिनट पर जो गाड़ी इधर से जाती है उसके आने के $\frac{1}{2}$ घन्टा पूर्व १५ साथियों सहित भीला के जंगल के समीप की रेलवे लाईन को खोल देना, और मैं अपने २५ साथियों सहित आगे के कार्य-क्रम के लिये तैयार रहूँगा।

जैसी आपकी इच्छा ! अच्छा जाओ, अब देर करने की आवश्यकता नहीं। मनोहर अपने साथियों सहित कार्यालय से चला गया। लाल कुछ देर तक बैठा सोचता रहा और थोड़ी देर बाद वह भी कार्यालय बन्द कर वहीं चला गया।

रात्रि को १२ बज कर ४७ मिनट हो चुके थे। गाड़ी पूर्ण वेग से चली जा रही थी, गाड़ी में बैठे कुछ यात्री ऊँच रहे थे, कुछ बातें कर रहे थे। अपने २ निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचने के लिये सभी व्यग्र थे। कुछ अपनी नवपत्नी को साथ लिये जा रहे थे। हृदय में बड़े २ अरमान थे। किसी के घर से खबर आई थी, तुम्हारी स्त्री बीमार है, बचने की आशा नहीं शीघ्र चले आओ..... बड़े उदास और खिन्न मन से बैठा हुआ वह सोच रहा था, कि हे विधाता ! मेरे पहुँचने तक उसे अवश्य जीवित रखना जिससे उसकी अंतिम अभिलाषा तो पूर्ण कर सकूँ। साथ के ही सेकेन्ड क्लास में एक वृद्ध सज्जन सर पर हाथ रखे दुःखी बैठे थे, एक २ क्षण उन्हें एक २ वर्ष की भाँति लग रहा था। उसके एक ही पुत्र था, वह भी एक वर्ष से राज्यादमा से ग्रस्त था। बेचारे ने जीवन की संचित पूँजी

२ मास से उसका पुत्र भुगाली चिकित्सालय में था। आज ही वहां से तार आया था कि हालत खराब है, तत्काल चले आओ। हृदय में बार २ पुत्र का ध्यान आ रहा था। क्या यह दुःख भी देखना बाकी है। आह! ईश्वर!! कौन से पापों का यह दण्ड है—मैं एक बार अपने हृदय के टुकड़े को देख तो लूँ!

खट-खट-तड़ाक की ध्वनि के साथ इंजन उछला—सारी ट्रेन में इतनी जोर से झटका लगा कि कोई भी यात्री स्थिर नहीं रह सका। चारों ओर कोलाहल मच गया। ड्राइवर ने इंजन रोकने की चेष्टा की परन्तु इंजन गाड़ी सहित ६ फिट नीचे खाई में गिर गया—चारों ओर हा हा कार मचा हुआ था। हाय मरा! हाय मरा! की ध्वनि से एक दूसरे के स्वर परस्पर टकरा रहे थे।

इतने में ठांय ठांय करके बन्दूकों की आवाज़ हुई, लाल और उसके साथी भूखे गिद्धों की भांति शवों को नोच नोच धन व जेवर एकत्र करने लगे।

आज समाचार पत्रों में छपा कि कल रात को भीषण ट्रेन दुर्घटना हो गई, पटरी उखड़ी हुई पाई गई। नित्य प्रति ऐसी घटनायें बढ़ने लगीं।



धन्यों के वेतन कटने की घटना ने भी अब उग्ररूप धारण कर लिया, क्योंकि मिल मालिक किसी प्रकार भी पूरा वेतन देने को तैयार नहीं हुए और इधर श्रमिक संघ भी किसी प्रकार वेतन कटने देना नहीं चाहता था आज इसी का अंतिम निर्णय करने के लिये कामरेड लाल के सभापतित्व में श्रमिकों की एक विशाल सभा होने जा रही थी।

जिन्दावाद ! कामरेड लाल जिन्दा वाद । के नारों के साथ समा की कार्यवाही आरम्भ हुई । और कामरेड लाल ने भाषण देना आरम्भ किया साथियों !

आज मजदूरों पर पूंजीपति मालिकों के जुल्म बराबर बढ़ रहे हैं । वे गरीबों का खून चूस २ कर अपनी तिजोरियां भर रहे हैं । मैं आपसे पूछता हूँ कि आप लोग यह जुल्म कब तक बर्दाश्त करेंगे । क्या अभी अपनी हड्डियों को भी इन भूखे भेड़ियों से नुचवाना चाहते हैं ? आप अपने घरों की ओर देखें, अपने बच्चों को देखें, भीषण जाड़ा पड़ रहा है । बच्चें ठंड से सिकुड़ कर अपनी माँ से चिपटे हुये हैं, शरीर ढकने को भी जब कपड़े नहीं, तो ठंड से बचने के लिये कपड़े कहां से आयें ! परन्तु यह पूंजीपति ! यह कसाई ! महलों में अपने बच्चों को लिये गद्दों पर सो रहे हैं ! यह सब किसके बल पर—सिर्फ तुम्हारे बल पर—मेहनत किसी की और गुल छुरें कोई उड़ाये तुम्हारी स्त्रियों को लाज ढकने के लिये भी वस्त्र नहीं । और इनकी स्त्रियाँ रेशम पहन कर मुँह पर लाली और क्रीम पोत कर हज़रतगंज के बाज़ार में चहल कदमी करती हैं, मोटरों पर हवा खाती हैं, और तुम लोगों के पैरों में चलते २ छाले पड़ जाते हैं । चिल चिलाती धूप में ज़मीन से निकलती हुई आग से पैरों को बचाने के लिये तुम्हें जूते भी नसीब नहीं ! तुम्हारे पास पेट भरने को अन्न भी नहीं, उर सेठों के कुत्ते भी टोस्ट मक्खन उड़ा रहे हैं ! उठो ! जागो !! ज़माना बदल रहा है, अब तुम्हें हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में लेनी है, इन पूंजीपतियों के दलालों से हुकूमत छीनना है—इन्हें अब जिन्दा रहने का भी कोई हक नहीं । हमें अपने हकों के लिये लड़ाई करना होगी, बिना लड़े कुछ नहीं मिलेगा, अपने इन निर्दयी मालिकों को दिखा दो, कि हममें भी जान है, हमारा भी संगठन है, हम किसी भी मजदूर का वेतन नहीं कटने देंगे । इसके

आप सब तैयार हैं कल से हड़ताल चलेगी ?

एक स्वर से सब मजदूरों ने हाथ उठा कर कहा, हम सब तैयार हैं ! कल से काम पर नहीं जायेंगे जब तक धन्नों का पूरा वेतन नहीं मिलेगा, हम काम नहीं करेंगे ! इन मिल मालिकों का और अपना खून बहा देंगे !—इनकलाब जिन्दाबाद के साथ सभा समाप्त हो गई ।

सभा समाप्त कर लाज पाटों के दफ्तर में आया ही था, कि कार का हार्न सुन कर बाहर आया। ड्राईवर ने कहा—आपको इसी समय सेठ मनीराम ने याद किया है। लाज—अच्छा ! कह कर अन्दर गया और कुछ क्षण पश्चात् आकर कार पर बैठ गया।

सेठ मनोदाल अपने सुसज्जित कमरे में बैठे अपने सहकारी से बातें कर रहे थे। लाल को सामने देख कर उन्होंने सहकारी को चले जाने का संकेत किया और लाल को अपने समीप की ही कुर्सी पर बैठने के लिये कहा क्यों श्रीमान् जी ! आपका इस हड़ताल से क्या लाभ है।

मैं अपने लाभ के लिये हड़ताल थोड़े ही करता हूँ। गरीब मजदूरों का वेतन काट कर ही आपको कौन सा बड़ा लाभ हो जायेगा।

वात यह नहीं है, मिस्टर लाल ! यदि इस प्रकार मज़दूर जब जी चाहें काम पर नहीं आयें, और उनका वेतन न काटा जाय तो कौन मज़दूर अनुशासन मानेगा । आपही बताइये मिल की व्यवस्था कितने दिन ठीक प्रकार चल सकेगी ? मैं यह नहीं चाहता की आप व्यर्थ की मुसीबत में फँसें ! यदि कल हड़ताल हुई तो गोली अवश्य चलेगी ! मैं चाहता हूँ कि व्यर्थ का रक्तपात न हो, वेतन काटने में रुपयों का प्रश्न नहीं वरन् अनुशासन का प्रश्न है । मैं अभी, यह लीजिये ! आपकी संस्था को १००० रुपये देता हूँ । कल की हड़ताल किसी तरह रोक दीजिये ।

एक हजार के लिये मैं मज़दूरों के साथ विश्वासघात करूँ, आप

अच्छा दो हजार ले लीजिये !

नहीं सेठ जी मैं इतना तुच्छ नहीं कि थोड़े रूपयों के लिये अपना ध्येय बेच दूँ ।

तीन हजार सही !

सेठ मनीराम धन राशि बढ़ा रहे थे, और कामरेड लाल सोंच रहे थे कि इतना धन क्यों छोड़ जाय । इस धन से न जाने कितने काम चलेंगे, परन्तु फिर भी कुछ और बढ़वाने के लिये लाल अभी अस्वीकार ही करते जा रहे थे ।

अंत में जब सेठ जी ने पांच हजार लगा दिये और स्पष्ट कह दिया—कि यदि अब भी आप नहीं मानते तो जाइये, सुबह देखा जायेगा ! तब विवश होकर लाल चुपचाप यह धन राशि स्वीकार करके सुबह हड़ताल न होने देने का बचन देकर वहां से चल दिया और दफ्तर आकर सो गया ।

सवेरा होते २ मिल की फाटक पर मज़दूर इकट्ठा हो गये इतने में कामरेड लाल भी आये और मज़दूरों से कहने लगे, साथियों ! अभी मैं मिल मालिक से बातें करके आ रहा हूँ, वह हमारी मांग पर विचार करने का आश्वासन देते हैं, लेकिन वह चाहते हैं कि आज हड़ताल न की जाय । कामरेड लाल अपनी बात पूरी भी न कर पाये थे कि चारों ओर से आवाज़ें आने लगी—नहीं ! नहीं ! हड़ताल अवश्य होगी ! हम सेठ की बातों में नहीं आर्येंगे “इन्कलाब जिन्दा वाद” लाल ने और भी अधिक ज़ोर से नारा लगाया, और फिर ज़ोर से कहने लगा—साथियों ! जब मिल मालिक पहले से ही डरकर हमारे प्रतिनिधि से बातचीत करके हमारी मांग स्वीकार करने को तैयार हैं, तो बेकार खून खराबा कराने से क्या लाभ !

मज़दूर फिर चिल्लाने लगे यह सध सेठ का धोखा है, वह हड़ताल

तुड़वाकर हम धोखा देना चाहता है, हम उसकी चाल में नहीं आयेंगे !

कुछ मज़दूर चुपचाप खड़े कामरेड लाल की बातें सुन रहे थे । उनके दिल में यह बात जच गई कि जय मालिक हमारी मांग पर गौर करना चाहते हैं—तो हमें देखना चाहिये । वस ! उन्होंने हड़ताल का विरोध आरम्भ कर दिया, और मिल में घुसने का प्रयत्न करने लगे मज़दूरों के दो दल बन गये, एक हड़ताल तोड़ना चाहता था, दूसरा हड़ताल करना, इसी बात पर दोनों दलों में परस्पर मुठभेड़ हो गई और दोनों ओर से पत्थर चलने लगे ।

पुलिस तो तैयार खड़ी ही थी । सिपाही आगे बढ़े और मज़दूरों की ओर रायफलें तान कर आज्ञा की प्रतिया करने लगे । पुलिस अधिकारियों ने ज़ोर से कहा—तुम लोग यहां से हट जाओ ! वरना हम गोली चलवा देंगे ।

हड़ताली मज़दूर इन्कलाब का नारा लगाते हुए मिल की फाटक की ओर—अन्दर जानेवाले मज़दूरों को रोकने के लिये आगे बढ़े । पुलिस अधिकारी भी फिर सबत करने के लिये आगे बढ़े, किन्तु इतने में ही एक पत्थर आकर पुलिस अधिकारी के सिर पर लगा । वैसे ही धांय धांय कर रायफलें चलने लगीं । कितने ही मज़दूर घायल हो गये । कुछ शहीद हो गये ! सबसे आगे एक युवक का शरीर पड़ा था सीने पर गोली लगने से रक्त बह रहा था । उसका नाम श्याम था—गुरु अर्जुन देव—बन्दा वैरागी, हकीकत के बलिदानों की गाथायें उसने पढ़ी थी । भगतसिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, राजगुरु, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल आदि वीरों का आत्मोत्सर्ग उसने देखा था और देखा था सावरकर बन्धुओं और भाई परमानन्द आदि का अपूर्व त्याग !

जिस समय मज़दूरों पर गोलियां चलने वाली थीं, उस समय यह युवक एक दर्शक के रूप में खड़ा था । अचानक गरीब मज़दूरों पर गोली चलते देख वह अपने को रोक न सका—और भारत माता की

जय कहता हुआ धिजली के समान तेजी से आगे बढ़ पाया, और अपने पहली गोली अपने सीने पर लेली ।

उसके चेहरे पर आत्म बलिदान के भाव अंकित थे !

मनु की लगाम में जकड़ा हुआ यह वीर आत्म-बलिदान का पाठ पढ़ा चुका था ।

परन्तु कामरेड लाल का कहीं पता न था, जिस डोरी के द्वारा वह मार्क्स के खूँटे में बंधा था, वह बहुत बड़ी थी—प्रयास ढील थी उसे !



राष्ट्र में नवचेतना उत्पन्न करने वाला
यह साहित्य अवश्य पढ़िये !



भारतीय इतिहास की राष्ट्रीय रूप-रेखा	१—८—०
सावरकर-वाद	—८—०
“सिंहनाद” (ओजस्वी कविताओं का संग्रह)	—४—०
राष्ट्रीय ज्वाला (क्रान्तिकारी विचार)	—२—०
पाकिस्तान का प्रतिकार	—१—०
मुस्लिम क्या हैं ?	—१—६
रण-भेरी	—२—०
हमारा कार्य-क्रम	—१—६
मार्क्स का खूंट	—२—०
दूध के धोये	—३—०

पुस्तकें मिलने का पता:—

राष्ट्रीय प्रचार संघ
लखनऊ

पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित । मुद्रक:-राष्ट्रीय मुद्रणालय लखनऊ

